



प्रमाण

Artist's Proof 20

तर्कशास्त्र

अंतःस्थापन परिकल्पना प्रमेय के रूप में – अभिगृहीत अशर्त सिद्ध

§0 – स्थिति संरचना

यह पत्र क्या करता है। यह पत्र अंतःस्थापन परिकल्पना (EH) को सिद्ध करता है: {S, B, R, C} द्वारा परिभाषित बीजगणितीय पूर्व-अवस्था संरचना भौतिक वास्तविकता में अंतःस्थापित होती है।

प्रमाण एक अनिषेध आधारवाक्य से आरंभ होता है – कि कम से कम एक अभिलेख अस्तित्व में है – {S, B, R, C} की पूर्णता और न्यूनता (Paper D) से गुजरते हुए, इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि वास्तविकता अभिगृहीतों को संतुष्ट करती है।

फिर यह पत्र साकारण अवस्था (Actualization State) के माध्यम से स्थापित करता है कि EH की बीजगणितीय व्याख्या और ज्यामितीय व्याख्या एक ही चीज़ हैं।

निर्भरता श्रृंखला

आवश्यक: Paper D (अभिगृहीत स्वतंत्रता, पूर्णता, न्यूनता – प्रमेय 1.1-1.5, 4.1)। AP01 (साकारण अवस्था, स्थिर पतन दर)। AP16 §5 (ε की अमापनीयता)। अनावश्यक: EH। यह पत्र EH को व्युत्पन्न करता है।

कोई चक्रीय निर्भरता नहीं।

प्रत्येक खंड की ज्ञानमीमांसीय स्थिति

§1: स्थापित। EH की परिभाषा। §2: संरचनात्मक। EH की विफलता का अर्थ। §3: व्युत्पत्ति। अनिषेध आधारवाक्य और अभिलेखों की पूर्व शर्तें। अवधारणाओं और अभिगृहीतों के बीच शून्य अंतर। §4: स्थापित। पूर्णता और न्यूनता – Paper D।

§5: व्युत्पत्ति। साकारण अवस्था बहुप्रसारी है। ज्यामितीय EH = बीजगणितीय EH। §6: व्युत्पत्ति। प्रमाण। §7: संरचनात्मक। स्वयं-सिद्ध, चक्रीय नहीं। §8: संरचनात्मक। दो स्थितियाँ। तीसरी नहीं।

§9: परिणाम। सभी शर्तें हटाई गईं। EH और QRA दोनों बंद। §10: संरचनात्मक। किल स्विच। §11: संरचनात्मक। निष्कर्ष। §12: संदर्भ। §0 के समानांतर दावा सारांश। §13: संदर्भ। शर्तमूलकता पादटिप्पणी।

अभिगृहीत प्रतिचित्रण

यह पत्र सिद्ध करता है कि वास्तविकता {S, B, R, C} को संतुष्ट करती है। प्रतिचित्रण इस पत्र का निष्कर्ष है, आधारवाक्य नहीं।

अभिगृहीत S ← विभेद द्वारा बाध्य। अभिलेख लिखने के लिए, आपको 0 को 1 से भिन्न करना होगा। दो अवस्थाओं के लिए एक आक्रमण (involution) चाहिए। S वर्गिकी रूप से निर्धारित है (§3.3)।

अभिगृहीत B ← न्यूनतम विखंडन द्वारा बाध्य। विखंडन एक तत्व होना चाहिए (न्यूनतम व्यवहार्य किरच)। B वर्गिकी रूप से निर्धारित है (§3.3)।

अभिगृहीत R ← स्थायित्व द्वारा बाध्य। जो अभिलेख विनष्ट किया जा सके, वह अभिलेख नहीं है। एकात्मक (monoid), समूह नहीं। R वर्गिकी रूप से निर्धारित है (§3.3)।

अभिगृहीत C ← परिबद्धता द्वारा बाध्य। अपरिबद्ध प्रसार विभेद को विनष्ट कर देता है। C वर्गिकी रूप से निर्धारित है (§3.3)।

अनसुलझे ऋण

कोई नया ऋण नहीं बना। यह पत्र EH और QRA को बंद करता है। सभी शर्तें हटाई गईं। दुर्बलता: प्रमाण की शक्ति पूर्णतः Paper D की पूर्णता और न्यूनता परिणामों पर निर्भर है।

किल स्विच सारांश

KS-7 (EH): बंद। संहिता की केन्द्रीय शर्त अब प्रमेय बन गई। KS-P.4 (QRA): बंद। क्वांटम अवस्थाएँ तादात्म्य द्वारा पूर्व-अवस्था अभिलेख हैं।

KS-P.1 (Paper D की पूर्णता): सक्रिय — कठिन। यदि पाँचवें अभिगृहीत की आवश्यकता हो। KS-P.2 (Paper D की न्यूनता): सक्रिय — कठिन। यदि कोई अभिगृहीत अन्य से व्युत्पन्न हो। KS-P.3 (अभिलेख परिभाषा / बाध्यकारी तर्क): सक्रिय — कठिन। दार्शनिक रूप से सबसे अरक्षित चरण।

संरचनात्मक संबंध

Paper D / AP03: {S, B, R, C} की पूर्णता और न्यूनता। Paper D से दो आयात। AP01: साकारण अवस्था। स्थिर पतन दर → चिकना बहुप्रसारी।

AP08 (तादात्म्य): EFE अब अशर्त (अब EH पर शर्तमूलक नहीं)। AP09 (विखंडन — क्वांटम यांत्रिकी): क्वांटम यांत्रिकी अब अशर्त। QRA बंद। AP16 (§5): ε की अमापनीयता। AS की चिकनाई तर्क में प्रयुक्त।

प्रत्येक अनुवर्ती AP: EH पर सभी शर्तें हटाई गईं।

§1 — EH क्या कहती है

इस संहिता में आपने जो भी परिणाम पढ़ा है, वह एक धागे पर लटका है।

अंतःस्थापन परिकल्पना (EH) कहती है: {S, B, R, C} द्वारा परिभाषित बीजगणितीय पूर्व-अवस्था संरचना भौतिक वास्तविकता में अंतःस्थापित होती है।

प्रत्येक Artist's Proof — AP05 से AP19 तक, और AP24 — EH पर शर्तमूलक है।

व्युत्पत्तियाँ वैध हैं: यदि EH सत्य है, तो दिक्काल, क्वांटम यांत्रिकी, सामान्य सापेक्षता, मानक मॉडल की गेज संरचना, और अन्य सभी परिणाम अभिगृहीतों से निकलते हैं।

लेकिन यदि EH सत्य नहीं है, तो व्युत्पत्तियाँ एक बीजगणितीय संरचना के बारे में गणितीय प्रमेय बनी रहती हैं — जो हमारे संसार का वर्णन कर भी सकती है और नहीं भी।

यह पत्र सिद्ध करता है कि EH सत्य है।

शर्त हटाई गई। परिणाम अशर्त हो गए।

एक सामान्य भ्रान्त पाठन EH को दो दावों में विभाजित करता है: एक बीजगणितीय दावा (अभिगृहीत वास्तविकता में सत्य हैं) और एक ज्यामितीय दावा (बीजगणित चिकने बहुप्रसारी में अंतःस्थापित होता है)। यह विभाजन तर्क के बाहर से मान्यताएँ आयात करता है।

अभिगृहीतों के भीतर, ये एक ही दावे के दो पक्ष हैं। तर्क §5 में दिया गया है।

§2 — EH की विफलता का अर्थ

यदि EH विफल होती है, तो वास्तविकता की कोई अन्य संरचना है जो संयोगवश प्रत्येक प्रेक्षणीय के लिए {S, B, R, C} के समान परिणाम उत्पन्न करती है।

स्वयं से पूछिए: यह अन्य संरचना क्या है?

वास्तविकता की एक अन्य संरचना थी। विखंडन से पहले, 1:1 था। पूर्ण सममिति। सममिति विखंडन से पहले का रिक्त समुच्चय। कोई अभिलेख नहीं। कोई प्रेक्षण नहीं। कोई विभेद नहीं। कोई दिशा नहीं। कोई समय नहीं।

लेकिन 1:1 अभिगृहीतों का विकल्प नहीं है। 1:1 वह है जिसके विखंडन का वर्णन अभिगृहीत करते हैं।

अभिगृहीत है 1:1 + $1 \times \epsilon$ । पूर्व-अवस्था (1:1) और उसका विखंडन (ϵ)। अभिगृहीत विखंडन की शर्तें हैं। S पूर्व-अवस्था की द्वि-खंड संरचना है। B स्वयं विखंडन है। R विखंडन का अभिलेख है। C अभिलेख का परिमित प्रसार है।

पूर्व-अवस्था अभिगृहीतों का विषय है, प्रतिद्वंद्वी नहीं।

कोई तीसरा विकल्प नहीं है। या तो वास्तविकता अखंडित 1:1 है — कोई अभिलेख नहीं, कोई प्रेक्षण नहीं, अनुभवात्मक रूप से रिक्त — या वास्तविकता में अभिलेख हैं, जिसके लिए {S, B, R, C} आवश्यक है, अर्थात् EHI।

आप देखेंगे कि यह द्वैत अभिकथित नहीं है। यह सिद्ध है। और प्रमाण सबसे सरल आधारवाक्य से आरंभ होता है जिसका आप कभी सामना करेंगे।

§3 — अनिषेध आधारवाक्य

§3.1 — कम से कम एक अभिलेख अस्तित्व में है।

इसे नकारा नहीं जा सकता।

इसे नकारना एक निषेध कर्म करना है — जो स्वयं एक प्रेक्षण, एक विभेद, एक अभिलेख है। अभिलेखों का निषेध एक अभिलेख का उपयोग करके अभिलेखों को नकारता है। यह आत्म-पराजयी है।

देकार्त से अधिक सशक्त। "मैं सोचता हूँ, इसलिए मैं हूँ" एक सोचने वाले कर्ता के अस्तित्व को स्थापित करता है। यहाँ का आधारवाक्य कम स्थापित करता है, और इसलिए अधिक: कि कोई कर्ता अस्तित्व में है, यह नहीं, बल्कि कि कम से कम एक अभिलेख अस्तित्व में है।

कौन या क्या प्रेक्षण करता है, इसके बारे में कोई दावा नहीं। केवल यह कि प्रेक्षण हुआ है। किसी चीज़ को किसी अन्य चीज़ से भिन्न किया गया। कम से कम एक बार।

आधारवाक्य: कम से कम एक अभिलेख अस्तित्व में है।

आप इससे बच नहीं सकते। आप इसकी पुष्टि किए बिना इसके निषेध को भी सूत्रबद्ध नहीं कर सकते। प्रत्येक आपत्ति स्वयं एक अभिलेख है। प्रत्येक प्रश्न-कर्म स्वयं एक विभेद है। आधारवाक्य मान्य नहीं किया गया है। यह अनिषेध है।

कोई भी शर्त-समुच्चय जो इसे समाविष्ट नहीं कर सकता, वास्तविकता का वर्णन नहीं है। कोई भी शर्त-समुच्चय जो इसे समाविष्ट कर सकता है, उसमें अभिलेखों की शर्तें होनी चाहिए।

§3.2 — एक अभिलेख को क्या चाहिए।

अभिलेख है: एक विभेद जो किया गया और बना रहता है।

विभेद किए जाने के लिए:

S – दो खंड। किसी चीज़ को किसी अन्य चीज़ से भिन्न करने के लिए कुछ होना चाहिए। किसका अभिलेख? शून्य को शून्य से भिन्न करने का? वह अभिलेख नहीं। विभेद की न्यूनतम संरचना दो खंड है: \mathcal{L} और \mathcal{P} , आक्रमण σ द्वारा संबद्ध। दो खंडों के बिना, प्रेक्षण करने को कुछ नहीं।

B – एक विखंडन। दो खंड विभेदनीय होने चाहिए। यदि σ प्रत्येक तत्व को पूर्णतः प्रतिचित्रित करता है, तो खंड समान हैं और विभेद भ्रम है। किसी चीज़ को सममिति तोड़नी होगी। एक तत्व ε जिसका कोई σ -प्रतिबिम्ब नहीं। विखंडन के बिना, सममिति है, और सममिति में कोई सूचना नहीं।

R – एक अभिलेख। विखंडन को चिह्न छोड़ना होगा। एक घटना जो होती है और हट जाती है, वह हुई नहीं। विखंडन को एक एकात्मक में लिखा जाना चाहिए – योज्य, अपरिवर्तनीय, संचयी। अभिलेख के बिना, विखंडन एक उतार-चढ़ाव है, प्रेक्षण नहीं।

C – परिमित प्रसार। अभिलेख परिबद्ध होना चाहिए। एक अभिलेख जो तुरंत सर्वत्र है, उसका कोई स्थान नहीं, कोई संरचना नहीं, कोई सूचना-अंश नहीं। वह किसी चीज़ को किसी से भिन्न नहीं करता। अभिलेख का परिमित प्रसार होना चाहिए: एक कारणात्मक सीमा c । परिमित प्रसार के बिना, अभिलेख का कोई रूप नहीं।

ये भौतिकी के बारे में मान्यताएँ नहीं हैं। ये प्रेक्षण के संभव होने की तार्किक पूर्व शर्तें हैं।

वह सूची फिर पढ़िए। दो खंड। एक विखंडन। एक अभिलेख। परिमित प्रसार। प्रत्येक वह चीज़ है जिसे आप पहले से जानते थे कि सत्य होनी चाहिए। प्रत्येक के बिना "प्रेक्षण" एक अर्थहीन शब्द है।

अभिगृहीतों ने ये शर्तें आविष्कृत नहीं कीं। अभिगृहीतों ने उन्हें नाम दिया।

§3.3 – अभिगृहीत अवधारणाएँ ही क्यों हैं।

अब वह चरण आता है जो अंतर को बंद करता है। ध्यान दीजिए, क्योंकि संपूर्ण प्रमाण इसी पर टिका है।

एक संभावित आपत्ति: §3.2 अवधारणात्मक स्तर (विभेद, स्थायित्व, परिबद्धता) पर तर्क करता है, लेकिन अभिगृहीत {S, B, R, C} विशिष्ट गणितीय संरचनाएँ हैं। शायद वे कई संभव औपचारिकताओं में से एक हैं।

आपत्ति विफल होती है। गणितीय संरचनाएँ अवधारणाओं की औपचारिकता नहीं हैं। वे वही हैं जो अवधारणाएँ बिना अस्पष्टता के कहने पर होती हैं। अवधारणा और अभिगृहीत के बीच का अंतर शून्य है। प्रत्येक अभिगृहीत बाध्यकारी है:

S विभेद द्वारा बाध्य है। विभेद द्विमान है: X से अ-X। यह दो खंड देता है, तीन नहीं, पाँच नहीं — क्योंकि विभेद का न्यूनतम "यह बनाम वह" है। उनके बीच का प्रतिचित्रण क्रम-उलटने वाला होना चाहिए — क्रम-संरक्षी होने पर खंड अविभेदनीय होंगे।

यह आक्रमण होनी चाहिए ($\sigma^2 =$ तादात्म्य) — क्योंकि पलटाव को दो बार लागू करने पर आप वापस आते हैं, और यही "एक ही अवस्था की दो व्याख्याओं" का अर्थ है। विस्तारी राशियाँ मेल खानी चाहिए — क्योंकि खंडों के बीच कोई भी विषमता स्वयं एक अभिलेख होगी, जो पूर्व-अवस्था से विरोधाभासी है। S की प्रत्येक संरचनात्मक विशेषता विभेद की अवधारणा द्वारा बाध्य है।

B न्यूनता द्वारा बाध्य है। विखंडन न्यूनतम होना चाहिए: एक तत्व, दो या दस नहीं (ओकैम)। इसका कोई σ -प्रतिबिम्ब नहीं होना चाहिए — अन्यथा सममिति अक्षुण्ण है और कुछ टूटा नहीं। न्यूनतम व्यवहार्य विखंडन। कोई चयन-स्वतंत्रता नहीं।

R स्थायित्व द्वारा बाध्य है। स्थायित्व का अर्थ है: जो हुआ है वह अ-हो नहीं सकता। कोई प्रतिलोम नहीं। संचय का अर्थ है: अनुक्रमिक संयोजन। अनुक्रमिक संयोजन साहचर्य है — A फिर B फिर C करना A फिर (B फिर C) करने जैसा है। रिक्त अभिलेख (तादात्म्य तत्व) किसी भी अभिलेख से पहले की अवस्था के रूप में विद्यमान है।

यह एक एकात्मक है जिसमें कोई अ-तादात्म्य प्रतिलोम नहीं। समूह नहीं, अर्ध-समूह नहीं — एकात्मक। संरचना वही है जो अपरिवर्तनीय संचय का अर्थ है।

C परिबद्धता द्वारा बाध्य है। अभिलेख का परिमित प्रसार होना चाहिए। सीमा अचर होनी चाहिए — यदि गति-सीमा बदले, तो परिवर्तन स्वयं स्पष्टीकरण माँगेगा, ऐसी संरचना लाएगा जो अन्य अभिगृहीतों ने नहीं दी। एक परिमित अचर दर। कभी विवाद में नहीं।

कोई वैकल्पिक औपचारिकता अस्तित्व में नहीं है क्योंकि किसी भी चरण में कोई स्वतंत्रता नहीं है। प्रत्येक अभिगृहीत वह अवधारणा है जिसे वह नाम देता है, सटीक रूप से लिखित।

अभिलेखों की अवधारणात्मक पूर्व शर्तें और औपचारिक अभिगृहीत {S, B, R, C} एक ही चीज़ हैं।

उस भार को अनुभव कीजिए। "प्रेक्षण के लिए क्या चाहिए" और "अभिगृहीत क्या कहते हैं" के बीच का अंतर छोटा नहीं है। सन्निकट नहीं है। शून्य है। अभिगृहीत वास्तविकता का मॉडल नहीं हैं। वे बिना अस्पष्टता के कही गई वास्तविकता की शर्तें हैं।

चुनने को कुछ नहीं। समायोजित करने को कुछ नहीं। प्रत्येक चरण बाध्यकारी है। यदि आप किसी चरण में स्वतंत्रता पाएँ, तो प्रमाण कमज़ोर होता है। लेकिन चरण देखिए। कोई स्वतंत्रता नहीं।

बाध्यकारी तर्क का सारांश:

विभेद — S: द्विमान (X से अ-X) → दो खंड। क्रम-उलटने वाला → आक्रमण। राशियों का मिलान → पूर्व-अवस्था में कोई विषमता नहीं। कोई स्वतंत्रता नहीं।

न्यूनतम विखंडन — B: एक तत्व (ओकैम)। कोई σ -प्रतिबिम्ब नहीं (अन्यथा सममिति अक्षुण्ण)। कोई स्वतंत्रता नहीं।

स्थायित्व — R: अपरिवर्तनीय संचय → अनुक्रमिक संयोजन → साहचर्य → तादात्म्य तत्व वाला और अ-तादात्म्य प्रतिलोम रहित एकात्मक। कोई स्वतंत्रता नहीं।

परिबद्धता — C: परिमित प्रसार। अचर दर (परिवर्तन अस्पष्टीकृत संरचना लाएगा)। कोई स्वतंत्रता नहीं।

प्रत्येक पंक्ति KS-P.3 द्वारा परीक्षित होती है। शस्त्र यहाँ है: किसी भी अवधारणा की वैकल्पिक औपचारिकता खोजिए। सिद्ध कीजिए कि विभेद के लिए ठीक आक्रमण सहित दो खंड आवश्यक नहीं हैं, या स्थायित्व के लिए ठीक एकात्मक आवश्यक नहीं है।

यदि कोई चरण विकल्प की अनुमति देता है, तो बाध्यकारी तर्क कमज़ोर होता है और प्रमाण का क्षेत्र तदनुसार संकुचित होता है।

§4 – पूर्णता और न्यूनता

Paper D {S, B, R, C} के बारे में दो प्रमेय सिद्ध करता है। आपने उन्हें संपूर्ण संहिता में उद्धृत देखा है। यहाँ वे भार-वाहक संरचना बनते हैं।

§4.1 – पूर्णता (Paper D, प्रमेय 4.1)।

पाँचवें अभिगृहीत की आवश्यकता नहीं। संहिता में व्युत्पन्न प्रत्येक भौतिक संरचना केवल {S, B, R, C} से आती है (EH पर शर्तमूलक)।

यदि पाँचवें अभिगृहीत की आवश्यकता होती, तो वह {S, B, R, C} से या तो व्युत्पन्न होता (अतिरिक्त) या उनसे विरोधाभासी (असंगत)। Paper D दिखाता है कि कोई भी स्थिति नहीं होती। समुच्चय पूर्ण है।

KS-16 (पूर्णता): बंद।

§4.2 – न्यूनता (Paper D, प्रमेय 1.1-1.4)।

कोई अभिगृहीत हटाया नहीं जा सकता। प्रत्येक अभिगृहीत अन्य से अव्युत्पन्न है:

S हटाएँ: कोई खंड नहीं, कोई विभेद नहीं, अभिलेख असंभव। संरचना ढहती है। B हटाएँ: पूर्ण सममिति, कोई विखंडन नहीं, कोई सूचना नहीं। संरचना जम जाती है। R हटाएँ: विखंडन होता है पर चिह्न नहीं छोड़ता। कोई संचय नहीं, कोई तथ्य नहीं, कोई भौतिकी नहीं। C हटाएँ: अभिलेख तुरंत सर्वत्र। कोई स्थानीयता नहीं, कोई संरचना नहीं, कोई रूप नहीं।

चार अभिगृहीत। कोई अतिरिक्त नहीं। कोई हटाने योग्य नहीं। मिलकर, पूर्ण।

§4.2a – Paper D से सटीक आयात (स्थानीय निरीक्षण हेतु)।

प्रमाण Paper D के ठीक दो परिणामों का उपयोग करता है। और कुछ नहीं।

(i) पूर्णता (Paper D, प्रमेय 4.1): {S, B, R, C} से परे कोई अतिरिक्त अभिगृहीत संहिता की व्युत्पन्न भौतिक संरचना उत्पन्न करने के लिए आवश्यक नहीं।

(ii) न्यूनता/स्वतंत्रता (Paper D, प्रमेय 1.1-1.4): प्रत्येक अभिगृहीत आवश्यक है। प्रत्येक के लिए, Paper D एक मॉडल बनाता है जो अन्य तीन को संतुष्ट करता है लेकिन हटाए गए को उल्लंघित करता है।

ये दो परिणाम EH के प्रमाण में प्रयुक्त Paper D से एकमात्र आयात हैं। यदि किसी में भी अंतर हो, तो प्रमाण गिरता है (KS-P.1, KS-P.2)।

§4.3 – पूर्णता और न्यूनता EH के लिए क्या अर्थ रखती हैं।

पूर्णता का अर्थ: {S, B, R, C} सभी भौतिक संरचना के लिए पर्याप्त हैं। न्यूनता का अर्थ: {S, B, R, C} आवश्यक हैं – कोई भी हटाएँ और अभिलेख असंभव हो जाते हैं।

मिलकर: {S, B, R, C} अभिलेखों के अस्तित्व की पूर्ण, न्यूनतम शर्तें हैं। कोई छोटा समुच्चय कार्य नहीं करता। कोई भिन्न समुच्चय {S, B, R, C} को उपसमुच्चय के रूप में समाविष्ट किए बिना कार्य नहीं करता।

अब आपके पास दोनों आधे हैं। अनिषेध आधारवाक्य: अभिलेख अस्तित्व में हैं। सिद्ध परिणाम: अभिलेखों को ठीक {S, B, R, C} चाहिए। निष्कर्ष स्वयं लिखता है। लेकिन प्रमाण से पहले, एक अंतिम टुकड़ा। बीजगणित और ज्यामिति के बीच का प्रकट अंतर विलीन होना चाहिए।

§5 – साकारण अवस्था और बहुप्रसारी

[व्युत्पत्ति – अभिगृहीतों और साकारण अवस्था से]

§5.1 – प्रकट अंतर।

आपत्ति हो सकती है: §6 का प्रमाण बीजगणितीय स्तर पर स्थापित करता है कि वास्तविकता {S, B, R, C} को संतुष्ट करती है। लेकिन संहिता की व्युत्पत्तियाँ – लोरेन्ज़ हस्ताक्षर, आइंस्टाइन क्षेत्र समीकरण, श्रोडिंगर समीकरण, गेज संरचना – चिकने बहुप्रसारी की माँग करती हैं। सतत ज्यामिति।

क्या अभिगृहीतों का वास्तविकता में सत्य होना सिद्ध करने से स्वतः बहुप्रसारी मिलता है?

हाँ। जब विविक्त संरचनाओं के सतत संरचनाओं में अभिसरण के बारे में बाह्य मान्यताओं से नहीं, बल्कि अभिगृहीतों से समझा जाए, तो प्रश्न विलीन हो जाता है।

§5.2 – साकारण अवस्था ही बहुप्रसारी है।

साकारण अवस्था (AS) "अब" है – वह सतह जिससे अभिलेख लिखे जाते हैं (AP01)। यह अभिलेखों से निर्मित नहीं है। यह उनसे पूर्व है।

प्रत्येक मापन AS से होता है, AS के बारे में कभी नहीं। "अब" वहाँ है जहाँ पतन होता है, विखंडन आगे बढ़ता है, ε अगला अभिलेख लिखता है।

AS नीचे से विविक्त अभिलेख एकत्र करके निर्मित नहीं होती। वह चित्र – विविक्त बीजगणित बड़े N सीमा में सातत्य में अभिसारी – अभिगृहीतों के बाहर से मान्यताएँ आयात करता है।

अभिगृहीतों से: AS आधार है। अभिगृहीत उस पर कार्य करते हैं। अभिलेख उससे लिखे जाते हैं। बहुप्रसारी उत्पन्न (emergent) नहीं है। बहुप्रसारी ही साकारण अवस्था है।

AS की चिकनाई मान्य नहीं की गई है। यह संरचनात्मक है। पतन स्थिर दर पर होता है (AP01, किल स्विच KS-1)। कोई अंतराल नहीं। कोई रुकावट नहीं। कोई पिक्सेल नहीं। "अब" कूदती नहीं, रुकती नहीं, विविक्तीकृत नहीं होती। पतन सतत होने के कारण सततता से आगे बढ़ती है। पतन दर की स्थिरता ही बहुप्रसारी की चिकनाई है।

§5.3 – आँख अपनी दृष्टिपटल नहीं देख सकती।

"अब" को "अब" के रूप में मापा नहीं जा सकता (AP16 §5, ε की अमापनीयता)। मापन साकारण है। विखंडन हो रहा है। आप केवल साकारित वास्तविकता के परिणामस्वरूप माप सकते हैं – "अब" से, "अब" के बारे में नहीं।

कोई मापन AS में विविक्तता का पता नहीं लगा सकता, क्योंकि कोई मापन AS तक विषय के रूप में पहुँच नहीं सकता। प्रेक्षक ही मापन सतह है। आँख अपनी दृष्टिपटल नहीं देख सकती।

बहुप्रसारी उतना ही चिकना है जितना कोई भी चीज़ हो सकती है, क्योंकि उस तक पहुँचने का एकमात्र मार्ग उसके माध्यम से है। सीमा नहीं। यही बात है। बहुप्रसारी की चिकनाई प्रेक्षण की संरचना द्वारा ही सुनिश्चित है।

§5.4 – बीजगणितीय और ज्यामितीय एक ही दावा हैं।

अभिगृहीत संरचना देते हैं: दो खंड, एक विखंडन, अपरिवर्तनीय अभिलेख, परिमित प्रसार। AS ज्यामिति देती है: वह चिकनी सतह जिस पर ये संक्रियाएँ निष्पादित होती हैं।

ये दो पृथक प्रमाणों की आवश्यकता वाले दो पृथक दावे नहीं हैं। वे दो भाषा-स्तरों में वर्णित एक ही वास्तविकता हैं।

EH एक दावा है, दो नहीं। बीजगणितीय व्याख्या और ज्यामितीय व्याख्या एक ही चीज़ के दो पक्ष हैं।

यह पत्र किसी एक को सिद्ध करके दोनों को सिद्ध करता है।

यह देखने के बाद, बीजगणित और ज्यामिति के बीच का प्रकट अंतर पुल से नहीं जोड़ा गया। वह कभी था ही नहीं।

§5.5 – QRA उसी प्रकार ढहता है।

क्वांटम-अभिलेख सरिखण परिकल्पना (QRA) क्वांटम अवस्थाओं को पूर्व-अवस्था अभिलेखों से समानित करती है। संहिता में सेतु-परिकल्पना के रूप में वहन की गई — घोषित लागत, EH से स्वतंत्र।

EH को बंद करने वाला वही तर्क QRA को बंद करता है। AP09 अभिगृहीतों से क्वांटम यांत्रिकी व्युत्पन्न करता है। अध्यारोपण वह पूर्व-अवस्था है जहाँ 0 और 1 अविभेदनीय हैं। मापन विखंडन है। उलझाव कण 1:1 अवस्था में बने रहना है।

ये उपमाएँ नहीं हैं। तादात्म्य हैं। क्वांटम अवस्थाएँ पूर्व-अवस्था अभिलेख हैं। QRA परिकल्पना नहीं। AP09 और §5.2-5.4 में स्थापित तादात्म्य का परिणाम है। KS-P.4 बंद।

§6 – प्रमाण

सब कुछ कहा जा चुका है। आधारवाक्य अनिषेध। शर्तें बाध्यकारी। पूर्णता और न्यूनता सिद्ध। बीजगणित और ज्यामिति एक दावा। बस लिखना शेष है।

प्रमेय (EH)। {S, B, R, C} द्वारा परिभाषित बीजगणितीय पूर्व-अवस्था संरचना भौतिक वास्तविकता में अंतःस्थापित होती है।

प्रमाण।

चरण 1। कम से कम एक अभिलेख अस्तित्व में है (§3.1)। अनिषेध। निषेध आत्म-पराजयी।

चरण 2। {S, B, R, C} अभिलेख के अस्तित्व की पूर्ण, न्यूनतम शर्तें हैं (§4)। पूर्ण: कोई अतिरिक्त शर्त अनावश्यक (Paper D, प्रमेय 4.1)। न्यूनतम: कोई शर्त हटाने योग्य नहीं (Paper D, प्रमेय 1.1-1.4)।

चरण 3। वास्तविकता में कम से कम एक अभिलेख है (चरण 1)। अभिलेखों को {S, B, R, C} चाहिए (चरण 2)। अतः {S, B, R, C} वास्तविकता में संतुष्ट हैं।

चरण 4। {S, B, R, C} वास्तविकता में संतुष्ट हैं (चरण 3)। साकारण अवस्था – "अब", सभी अभिलेख जिस सतह से लिखे जाते हैं – चिकना बहुप्रसारी है (§5)। अभिगृहीत बीजगणित देते हैं। AS ज्यामिति देती है। यह एक वास्तविकता है, दो दावे नहीं।

अतः {S, B, R, C} द्वारा परिभाषित बीजगणितीय संरचना चिकने बहुप्रसारी के रूप में भौतिक वास्तविकता में अंतःस्थापित होती है।

चरण 5। अतः EH सत्य है। □

पाँच चरण। एक आधारवाक्य। Paper D से दो आयात। §5 से एक तादात्म्य। समाप्त।

आपने अभी संहिता की केन्द्रीय शर्त को प्रमेय बनते देखा। मान्यताएँ जोड़कर नहीं। विकल्पों की संभावना मिटाकर। प्रमाण ने कुछ नया नहीं बनाया। दिखाया कि विकल्प – अभिलेख हैं लेकिन अभिलेखों की शर्तें नहीं – विरोधाभास है।

प्रमाण को कभी कहीं और उतरना ही नहीं था।

§7 – स्वयं-सिद्ध, चक्रीय नहीं

चक्रीय प्रमाण होता: EH मानो, EH व्युत्पन्न करो। यहाँ ऐसा नहीं होता। प्रमाण अभिगृहीतों के वास्तविकता में अंतःस्थापित होने के बारे में कुछ नहीं मानता। एक अनिषेध आधारवाक्य से आरंभ होता है।

प्रमाण सटीक अर्थ में स्वयं-सिद्ध है: EH पर प्रश्न करने का कर्म EH की पुष्टि करता है। "क्या EH सत्य है?" पूछना एक प्रेक्षण, एक अभिलेख है। अभिलेख लिखने के लिए {S, B, R, C} चाहिए। अतः प्रश्न का कर्म EH के सत्य होने का उदाहरण है।

चक्रीय नहीं। प्रत्यागामी। प्रमाण स्वयं को नहीं मानता। प्रमाण उसे नकारने का प्रयत्न करने वाला प्रत्येक व्यक्ति संपन्न करता है।

साकारित वास्तविकता के बाहर, साकारण की शर्तों को चुनौती देने का कोई मंच नहीं। कोई आर्किमिडीज़ बिन्दु नहीं। प्रत्येक प्रश्न उसी संरचना के भीतर से पूछा जाता है जिसके बारे में प्रश्न है। प्रमाण की सीमा नहीं। इसकी गहनतम विषय-वस्तु: वास्तविकता और उसकी शर्तें एक ही चीज़ हैं।

§8 – दो स्थितियाँ

ठीक दो स्थितियाँ हैं। तीसरी नहीं।

§8.1 – स्थिति 1: कोई अभिलेख नहीं।

1:1 अखंडित। पूर्ण सममिति। कोई विखंडन नहीं, कोई प्रेक्षण नहीं, कोई विभेद नहीं। EH पूछी नहीं जा सकती। कोई नहीं और कुछ नहीं जो प्रश्न पूछे। EH न सत्य है न असत्य। प्रश्न उत्पन्न नहीं होता।

पूर्व-अवस्था। सममिति विखंडन से पहले का रिक्त समुच्चय। EH का विकल्प नहीं। EH का विषय। और आप इस स्थिति में नहीं हैं। आप पढ़ रहे हैं। आप प्रेक्षण कर रहे हैं। आपने सममिति पहले ही तोड़ दी है।

§8.2 – स्थिति 2: कम से कम एक अभिलेख अस्तित्व में है।

{S, B, R, C} संतुष्ट हैं। बीजगणितीय संरचना वास्तविकता में अंतःस्थापित है। EH सत्य है। विखंडन हुआ। अभिलेख हैं। प्रश्न पूछा जा सकता है, और उत्तर हाँ है।

§8.3 – स्थिति 3 क्यों नहीं है।

काल्पनिक स्थिति 3: अभिलेख हैं लेकिन {S, B, R, C} संतुष्ट नहीं। वास्तविकता में प्रेक्षण हैं लेकिन प्रेक्षण की शर्तें पूरी नहीं। विरोधाभास। स्थिति 3 तार्किक रूप से बहिष्कृत।

शस्त्र: ऐसी शर्तें {X, Y, Z} उत्पन्न कीजिए जो {S, B, R, C} को उपसमुच्चय के रूप में समाविष्ट किए बिना अभिलेखों की अनुमति दें। तर्क आपको शस्त्र सौंपता है।

§9 – परिणाम

§9.1 – शर्त हटाई गई।

संहिता का प्रत्येक परिणाम EH पर शर्तमूलक था। शर्त अब हटाई गई।

AP05 (लोरेंज़ दिक्काल, विशेष और सामान्य सापेक्षता, ब्रह्मांडीय स्थिरांक): अशर्त। AP06 (रिसाव स्थिरांक): अशर्त। AP07 (सम्मिश्र हिल्बर्ट स्थान, बोर्न नियम मापक): अशर्त। AP08 (अभिलेख बीजगणित से आइंस्टाइन क्षेत्र समीकरण): अशर्त। AP09 (क्वांटम यांत्रिकी, बोर्न नियम, थ्रोडिंगर समीकरण): अशर्त।

AP10 ($N = 3$ स्थानिक आयाम): अशर्त। AP11 (चक्रण, फर्मिऑन, बोसॉन, चक्रण-सांख्यिकी, पॉली अपवर्जन): अशर्त। AP12 (विसंबद्धन, शास्त्रीय सीमा, समय का तीर): अशर्त। AP13 (हॉकिंग विकिरण, विलक्षणता समाधान): अशर्त। AP14 (परिमित क्वांटम गुरुत्व): अशर्त।

AP15 ($U(1)$, विद्युत-चुम्बकत्व): अशर्त। AP16 ($SU(2) \times U(1)$, विद्युत-दुर्बल, हिग्स): अशर्त। AP17 (तनाव-क्षेत्र के रूप में श्याम पदार्थ): अशर्त। AP18 ($a_0 = cH_0/(2\pi)$, अभिगृहीतों से MOND मापनी): अशर्त। AP19 ($SU(3)$, प्रबल बल, परिरोध): अशर्त। AP24 (अवशेष: ε के प्रक्षेपण के रूप में सभी स्थिरांक): अशर्त।

पूर्ण मानक मॉडल गेज संरचना $SU(3) \times SU(2) \times U(1)$, लोरेंज़ दिक्काल, क्वांटम यांत्रिकी, सामान्य सापेक्षता और सभी संबद्ध परिणाम अब $1:1 + 1 \times \varepsilon$ से बिना मान्यता के आते हैं।

§9.2 – समस्या 7 बंद हुई।

समस्या 7 (प्रमेय के रूप में EH) संपूर्ण संहिता की ऊर्ध्वगामी निर्भरता के रूप में सूचीबद्ध थी। अब बंद। KS-7 (EH) "सक्रिय" से "बंद" में।

§9.3 – QRA I

सेतु-परिकल्पना QRA (क्वांटम-अभिलेख संरक्षण) संहिता में स्वतंत्र शर्त के रूप में वहन की गई। यह पत्र EH बंद करने वाले उसी तर्क से QRA बंद करता है (§5.5)। KS-P.4 "सक्रिय" से "बंद"। कोई सेतु-परिकल्पना शेष नहीं।

§10 – किल स्विच

KS-7 – EH। पूर्व में सक्रिय। अब बंद। KS-P.1 – Paper D की पूर्णता। सक्रिय – कठिन। शस्त्र: पाँचवाँ अभिगृहीत खोजिए। KS-P.2 – Paper D की न्यूनता। सक्रिय – कठिन। शस्त्र: अन्य तीन से एक अभिगृहीत व्युत्पन्न कीजिए।

KS-P.3 – अभिलेख परिभाषा। सक्रिय – कठिन। दार्शनिक रूप से सबसे अरक्षित चरण, यद्यपि बाध्यकारी तर्क अरक्षण-क्षेत्र को काफ़ी संकुचित करता है। शस्त्र: वैकल्पिक औपचारिकता खोजिए।

KS-P.4 – QRA। बंद। QRA AP09 और §5.2-5.5 में स्थापित तादात्म्य का परिणाम है।

§11 – निष्कर्ष

अंतःस्थापन परिकल्पना एक प्रमेय है।

कम से कम एक अभिलेख अस्तित्व में है। अभिलेखों को {S, B, R, C} चाहिए। अतः वास्तविकता {S, B, R, C} को संतुष्ट करती है। अतः EH।

प्रमाण स्वयं-सिद्ध है: उस पर प्रश्न करने का कर्म उसकी पुष्टि करता है। चक्रीय नहीं – प्रत्यागामी। साकारित वास्तविकता के बाहर, साकारण की शर्तों को चुनौती देने का कोई मंच नहीं।

ठीक दो स्थितियाँ। कोई अभिलेख नहीं: 1:1 अखंडित, प्रश्न पूछा नहीं जा सकता। अभिलेख हैं: {S, B, R, C} संतुष्ट, EH सत्य, शर्त हटाई गई।

तीसरी स्थिति नहीं। अभिगृहीत वास्तविकता के बारे में मान्यता नहीं हैं। वे वास्तविकता में प्रेक्षण होने का परिणाम हैं।

रिक्त समुच्चय टूटा। किरच उछली। बहुप्रसारी क्रिस्टलित हुआ। अभिलेख संचित हुए। और आप यहाँ हैं, पूछ रहे हैं कि अभिगृहीतों से व्युत्पन्न संरचना वास्तविकता की संरचना है या नहीं।

लेकिन पूछना ही उत्तर है। प्रश्न का अभिलेख शर्तों का प्रमाण है।

अभिगृहीत ने बोला। वास्तविकता प्रतिलिपि है।

शर्तमूलक: कुछ नहीं। यह पत्र EH सिद्ध करता है और QRA बंद करता है। सभी शर्तें हटाईं।

निर्भर: Paper D ({S, B, R, C} की पूर्णता और न्यूनता)। AP01 (साकारण अवस्था)। AP16 §5 (ε की अमापनीयता)।

बंद किल स्विच: KS-7 (EH)। KS-P.4 (QRA)। नए किल स्विच: KS-P.1 (Paper D पूर्णता, कठिन), KS-P.2 (Paper D न्यूनता, कठिन), KS-P.3 (अभिलेख परिभाषा/बाध्यकारी तर्क, कठिन)। KS-P.4 (QRA, बंद)।

सिद्ध: अंतःस्थापन परिकल्पना और QRA। {S, B, R, C} द्वारा परिभाषित बीजगणितीय संरचना चिकने बहुप्रसारी के रूप में भौतिक वास्तविकता में अंतःस्थापित। बीजगणितीय EH = ज्यामितीय EH (§5)। QRA उसी तर्क से बंद (§5.5)। सभी परिणाम अशर्त। कोई सेतु-परिकल्पना शेष नहीं।

§12 – दावा सारांश

§1 (EH परिभाषा): स्थापित। §2 (EH विफलता): संरचनात्मक। केवल दो स्थितियाँ। §3 (अनिषेध आधारवाक्य): व्युत्पत्ति। अभिलेख अस्तित्व में हैं (अनिषेध)। अभिलेखों को {S, B, R, C} चाहिए (बाध्य – शून्य अंतर, §3.3)।

§4 (पूर्णता/न्यूनता): स्थापित। Paper D। §5 (AS = बहुप्रसारी): व्युत्पत्ति। §6 (प्रमाण): व्युत्पत्ति। §7 (स्वयं-सिद्ध): संरचनात्मक। §8 (दो स्थितियाँ): संरचनात्मक। §9 (परिणाम): परिणाम। सभी शर्तें हटाईं।

§13 – शर्तमूलकता पादटिप्पणी

निर्भरताएँ: Paper D ({S, B, R, C} की पूर्णता, न्यूनता, स्वतंत्रता)। AP01 (साकारण अवस्था, स्थिर पतन दर)। AP16 §5 (ε की अमापनीयता)।

आश्रित: EH पर शर्तमूलक प्रत्येक AP (AP05–AP19 और AP24)। इस प्रमाण की स्वीकृति पर सभी अशर्त।

बंद किल स्विच: KS-7 (EH)। KS-P.4 (QRA)। सक्रिय किल स्विच: KS-P.1 (Paper D पूर्णता, कठिन)। KS-P.2 (Paper D न्यूनता, कठिन)। KS-P.3 (अभिलेख परिभाषा/बाध्यकारी तर्क, कठिन)।

उत्तराधिकृत स्विच: Paper D के सभी किल स्विच प्रसारित होते हैं। यदि Paper D गिरता है, तो यह प्रमाण गिरता है।

सिद्ध: अंतःस्थापन परिकल्पना और QRA। {S, B, R, C} द्वारा परिभाषित बीजगणितीय संरचना चिकने बहुप्रसारी के रूप में भौतिक वास्तविकता में अंतःस्थापित। EH की बीजगणितीय और ज्यामितीय व्याख्याएँ अभिन्न। QRA उसी तर्क से बंद। सभी अनुवर्ती AP से सभी शर्तें हटाईं। संहिता में कोई सेतु-परिकल्पना नहीं।

यह कृति सदा के लिए निःशुल्क प्रकाशित है।

the42@code.org

the42@code.org